A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मैहर घराने में सितार वादन की विशेषताएं

Poonam Kumari[1], Dr. Prem Kishore Mishra[2]

1 Research Student, Instrumental Department, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
2 (Co-Research Supervisor) Associate Professor, Instrumental Department, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

सारांश

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सर्वाधिक प्रचलित सुमधुर तंत्रीवाद्य सितार मध्ययुग से विकसित होता हुआ अपने वर्तमान स्वरूप तक एक अत्यंत लोकप्रिय एवं पूर्ण वाद्य के रूप में अपना स्थान प्राप्त कर चुका है।प्राचीन काल से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारतीय शास्त्रीय संगीत में जो स्थान वीणा को प्राप्त था 18वीं शताब्दी के बाद वही स्थान सितार वाद्य ने प्राप्त किया।सितार वाद्य ने अत्यंत लोकप्रियता हासिल की, इस वाद्य को लोगों ने अधिक अपनाया, फलस्वरूप अन्य तंत्री वाद्यों की अपेक्षा सितार और विकसित होता चला गया, और अन्य तंत्री वाद्यों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय वाद्य के रूप में प्रचलित हुआ।सितार वीणा का ही एक प्रकार है, भारतीय त्रितन्त्री वीणा को ही सितार की जननी का श्रेय दिया जाता है।कुछ शताब्दी पूर्व के उस्ताद लोग जीवन पर्यंत वीणा या सितार के एक ही अंग की साधना पर अधिक बल देते थे, लेकिन मैहर घराने के सितार वादकों ने अपनी नयी-नयी शैली एवं नए-नए निर्माण व अंग का आविष्कार ही नहीं बल्कि सितार को पूरे विश्व भर में लोकप्रिय वाद्य बनाया।सितार वाद्य को विश्वविख्यात व सितार को उसके चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने का श्रेय मैहर घराने के सितार वादकों को ही दिया जाता है।

बीज शब्द: *मैहर, घराना, सितार, वाद्य, वादनशैली*

भूमिका-

उत्तर भारत मे प्रचलित सितार एक प्रमुख तंत्री वाद्य है, जिसे तुम्बे तथा कंठ से निर्मित डाँड को जोड़कर बनाया जाता है, जिसपर खूँटियों की सहायता से 7 तार व 13 तरब के तार कसे जाते हैं ।वर्तमान काल में सितार वाद्य के कई प्रकार प्रचलित हैं जिन्हें इस वाद्य के वादकों ने अपने-अपने सुविधानुसार विकसित किया।वैसे तो सितार के अनेक घराने विकसित हुए जिनमे से सबसे प्रमुख घराना या सितार का सर्वप्रथम घराना सेनिया घराना है, मुख्यतः ऐतिहासिक मतानुसार सेनिया बाज को सितार का प्रथम बाज माना गया है, तथा सितार के बाज का मुख्य विकास जयपुर से ही प्रारंभ हुआ ऐसा माना जाता है।श्री मनीलाल नाग तथा श्री राजभान सिंह के मतानुसार मुख्य रूप से उत्तर भारतीय संगीत में सितार वाद्य के दो बाज अत्यधिक प्रचलित हुए प्रथम सेनी बाज तथा द्वितीय पूर्वी बाज।भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना पद्धति एक ऐसी संस्था है जिसमें कलाकार अपने वंश की संगीत परम्परा का निर्वाह पूरे लगन व ईमानदारी के साथ करता है।घराना शब्द का भारतीय संगीत में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, घराने से तात्पर्य विशिष्ठ गुरु–शिष्य परम्परा से है, यह परम्परा संगीत के गायन, वादन एवं नृत्य इन तीनों विधाओं में ही घराने की प्रथा चली आ रही है।वाद्य शैली में घरानेदार शैली को "बाज" कहा जाता है।तंत्रकारी में बाज की प्रथा प्राचीन है।

किसी घरानेदार बाज का ज्ञान किसी कुशल घरानेदार वादक से ही प्राप्त किया जा सकता है चाहे वह वीणा का बाज हो या सितार अथवा सरोद का बाज हो।भारतीय संगीत जगत में घरानों का उद्भव हुआ, जिनमे से एक अत्यंत समृद्धशाली घराना मैहर घराने का भी नाम आता है।मैहर घराने को प्रारंभ करने का श्रेय उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब को है जो सेनिया परंपरा के प्रसिद्ध बीनकार एवं सरोद वादक उस्ताद वज़ीर खाँ साहब के प्रतिभाशाली शागिर्द रहे हैं।मैहर के नाम पर मैहर घराने की संगीत परंपरा का नाम पड़ा जो मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित है, मैहर एक प्राचीन रियासत थी, मैहर एक छोटा सा कस्बा (नगर) है, मैहर में ही एक पहाड़ की चोटी पर प्रसिद्ध देवी माँ शारदा का मंदिर है।यह मन्दिर वर्तमान में भी स्थित है इस मंदिर को लोग श्रद्धा से मैहर देवी के नाम से पुकारते हैं।

कुछ वर्ष पहले के उस्ताद लोग जीवन पर्यंत वीणा या सितार के एक ही अंग की साधना पर अधिक बल देते थे, लेकिन मैहर घराने के सितार वादकों ने अपने सितार वादन की सुविधानुसार नयी-नयी वादन शैली या अंगों का आविष्कार ही नहीं बल्कि सितार में कुछ परिवर्तन करके सितार को पूरे विश्वस्तर पर पहुंचाया।सितार वाद्य को पूरे विश्व में लोकप्रिय व उत्कृष्ट बनाने का श्रेय भी मैहर घराने के सितार वादकों की अपनी एक प्रमुख विशेषता रही है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

विषय प्रवेश

उत्तर भारत में सितार वाद्य को सरस्वती वीणा भी कहते हैं, सितार त्रितन्त्री का ही विकसित रूप माना गया है । सितार के जन्म से पूर्व तंत्री वाद्यों मे वीणा और गायन में ध्रुपद शैली को ही प्रधानता दी जाती थी वीणाओं के लुप्त होने पर कुछ काल तक भारत में रबाब, कानून तथा इसके समकक्ष वाद्यों का प्रचार रहा।भारतीय वीणा को ही सितार की जननी का श्रेय दिया जाता था।भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन, वादन, नृत्य का समान रूप से सम्मान किया जाता है, संगीत में गायन का सम्बन्ध कंठ से है,वादन का वादन की तंत्रकारी से है,नृत्य का शरीर की विभिन्न मुद्राओं से है।चूकि मेरा विषय मैहर घराने के तंत्रीवाद्य सितार पर है, तो मैं उसी पर व्याख्या करने का प्रयास करूंगी।

सितार वादन की विशेषताएं –मैहरघराने के सितार वादकों ने नियमबद्ध वादन क्रियाओं के आधार पर बाज को विकसित किया, सितार वादन को लोकप्रिय और सर्वश्रेष्ठ बनाया व प्रतिष्ठा दिलाई।सितार वादन की क्रिया को सुरबहार, वीणा के नियमों के आधार पर अलंकृत किया गया, मींड़ के काम के साथ-साथ सितार वाद्य की वादन क्रिया पर मिज़राब के बोलों का आश्रय लिया गया, मिज़राब के बोलों के आधार पर गतकारी करने की भी प्रथा इस घराने की विशेषता रही है।

मैहर घराने के सितार वादन में मींड़, गमक, मुर्की, कृंतन, खटका, जमजमा, सूत आदि उपकरणों के वादन के साथ-साथ सपाट तान क्रिया अत्यधिक प्रचलित हुई।मैहर घराने के सितार वादन क्रिया में प्रचलित अलंकरण सभी तंत्री वाद्यों में पूर्ण रूप से एक साथ संभव नहीं है,परंतु इन क्रियाओं के वादन के कारण मैहर घराने के सितार वादकों ने अपनी आवश्यकतानुसार समय-समय पर अपनी इच्छानुसार अनेक ढाँचेगत परिवर्तन किए, इसी के परिणाम स्वरूप वर्तमान कालीन सितार अपने परिष्कृत रूप में हमें प्राप्त हुआ।वादन मे अधिक आंस व ध्वनि के गूंज के लिए एक तुम्बे की जगह दो तुम्बे लगाए गए, लरज एवं खरज के तारों का प्रयोग किया गया जिससे तारों की संख्या मे वृद्धि हुई।

उपर्युक्त क्रियाओं के माध्यम से अपनी वादन शैली को सजाया एवं अपने नवीन कल्पनाओं के प्रयोग से सितार बाज को एक मौलिक विशेषता प्रदान की।सितार को उत्तर भारत का अत्यधिक प्रचलित वाद्य बनाने में मैहर घराने के सितार वादकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।मैहर घराने के सितार वादकों में सर्वप्रथम नाम भारत रत्न पं० रविशंकर जी का नाम लिया जाता है।

"हम कह सकते हैं कि इस घराने में सितार का अधिक प्रचार उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की सुपुत्री अन्नपूर्णा देवी और पं० रविशंकर ने किया ।सितार के साथ – साथ अन्नपूर्णा देवी सुरबहार अधिक बजाती थीं , लेकिन सार्वजनिक अनुष्ठानों में कम बजाने के पश्चात उनकी सितार वादन शैली की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।"[1] पं० रविशंकर जी ने अपने सितार वादन में मिज़राब के बोलों को अत्यधिक चमत्कारपूर्वक प्रस्तुत करके अपने सितार वादन को अधिक रोचक बनाया तो वहीं पं० निखिल बनर्जी जी पहले सितार वादक थे जिन्होंने आलाप से लेकर झाले तक के वादन पर पूर्ण अधिपत्य प्राप्त कर लिया था।

"जोड़ का काम निखिल जी बेजोड़ करते थे। जोड़ वे मध्य लय में करते थे । आलाप में जो पद विस्तार और स्वर प्रगति थी, उससे ही जो मुर्ती बनती, उसी श्रेणी में जोड़ का काम करते थे। उनके सुंदर सुर एवं छंद में ऐसा मेल था कि उसे भिन्न करना नामुमकिन था। बोल अंग का काम, गमक, लड़लपेट, लड़गुथाव, और तानकारी सभी कुछ एक सुंदर कल्पना का अंश था।"[2]

पं० रविशंकर जी की बंदिशों में कण, कृंतन व मुर्कीयों का अत्यधिक प्रयोग इस घराने की बंदिशों को विशिष्टता प्रदान करता है।पं० रविशंकर जी के बंदिशों मे ऊपर्युक्त अलंकरणों का इतना अधिक प्रयोग किया गया है, कि इन बंदिशों को लिपिबद्ध करना कठिन है, पं० रविशंकर जी ने लरज का तार और उसके बाद खरज का तार लगाया और सितार में चार सप्तक तक के वादन की सुविधा देकर सितार वादन की गंभीरता को बढ़ा दिया।गंभीर आलापचारी का प्रयोग जो बीन और ध्रुपद अंग पर निर्धारित है।गतों में लयकारी और उनकी तिहाईयों की विशेषता।पं० रविशंकर जी की गते द्रुतलय की अपेक्षा ज्यादातर विलंबित व मध्यलय में निबद्ध होती थी ।तीनताल के अतिरिक्त अन्य तालें जैसे- रूपक, एकताल, झपताल, चारताल, धमार आदितालों में निपुणता प्राप्त थी।कृंतन, मुर्की, राग की बढ़त पर विशेष ध्यान देते थे ।पं० रविशंकर जी की ताने जटिल छन्ददार छोटे-छोटे छंदों पर मिज़राब के बोलो में निबद्ध होती थी।झाले में अधिकतर दा रा दिर दारा दिर इन्हीं बोलों को अतिद्रुत लय में बजाते थे।झाले में तिहाईयों का अधिक प्रयोग करते थे।

1डॉ० पांचाली नंदी, सितार वादन शैली में राग और बंदिशें, परम्परा और प्रयोग, पृ० सं० ७३
2 जैन, डॉ० वीणा, सेनिया घराना और सितार वादन शैली पृ० सं० १२९

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

"पं० रविशंकर जी ने सितार में द्रुत गति के वादन के समय लरज – खरज से उत्पन्न अतिरिक्त ध्वनि को रोकने के लिए एक (U)आकार का हुक का भी प्रयोग किया यह हुक मध्य सप्तक के कोमल निषाद के पर्दे पर लरज – खरज के तारों के नीचे धागे से बांधा रहता है ।लरज व खरज दोनों तारों को फसा देने से इनकी ध्वनि बंद हो जाती है, एवं झाला का स्पष्ट वादन संभव हो जाता है।"[1]

विश्व विख्यात वायलिन वादक यहूदी मेन्यूहिन एक बार रविशंकर के सितार-वादन के संगीत को लेकर लिखा- "रविशंकर ने सर्वप्रथम भारत के हृदयग्राही, पूर्व विकसित एवं परिष्कृत संगीत का परिचय कराया। वे भारत के महान सितार-वादकों में से एक हैं और संगीत के अत्यंत प्रेरणादायक क्षणों के लिए मैं उनका ऋणी हूँ।"[2]

मैहर घराने के प्रतिष्ठित सितार वादक पं0 निखिल बनर्जी जी के सितार वादन में बीन अंग स्थान-स्थान पर देखने को मिलता है।उनके आलाप और विशेष रूप से विलंबित गत बीन अंग से सम्बन्धित होते थे।14 वर्ष की आयु में आप बाबा की शरण में आए और सितार की शिक्षा ग्रहण की।पं0 निखिल बनर्जी जी के अनेक रिकॉर्ड हैं जो इनकी वादन-शैली का प्रतिपादन करते हैं ।सितार वादन में पं० जी ने जिस विशेष शैली का निर्वाहन किया वह अनुकरणीय है। "पं० निखिल बनर्जी की वादन शैली की एक अलग विशेषता थी।वह था उनका स्वर लगाव जो सौन्दर्य (Aesthetics)से परिपूर्ण था ।आलाप में चिकारी का कम प्रयोग, बोलों का सही ढंग से प्रयोग कर खूबसूरती को कायम रखना ये सभी उनकी विशिष्ठ पहचान कराता है।"[3]पं० निखिल बनर्जी जी के रागों की वादन क्रिया में स्थिरता, ठहराव और गंभीरता रहती थी।आपके बाज में बीन और सुरबहार पूर्ण रूप से प्रदर्शित होता था।पं० निखिल बनर्जी जी पहले सितार वादक थे जिन्होंने आलाप से लेकर झाले तक के वादन पर पूर्ण अधिपत्य प्राप्त कर लिया था।आपके बाज में आलाप, जोड़, झाला, गत, तोड़ा, लड़ी, गुत्थाव, लड़ गुत्थाव, लड़ लपेट आदि क्रियाओं का पूर्ण प्रदर्शन होता था।स्वर लगाने का अनोखा अंदाज सितार वादन में विलंबित लय की विशिष्ठता इस घराने की सितार वादन की प्रमुख विशेषता को दर्शाती है, जो श्रोताजन को आनंदित कर देते थे।बाबाअलाउद्दीन खाँ के शिष्य होने के कारण निखिल बनर्जी गंभीर आलाप रागों का क्रम से विस्तार प्रायः लरज खरज के तारों पर किया करते थे, आपके सितार की आवाज दीर्घ रहती थी ।

इसका रहस्य यह है, कि वह एक छोटी सी जवारी का प्रयोग करते थे, जो इस घराने की अपनी एक अलग विशेषता है।आपके दायें-बायें दोनों हाथ एक साथ बराबर तैयार थे।पं० निखिल बनर्जी जी के बाज की विशेषता यह है, कि उनका सुरीलापन लय की जटिल से जटिल तथा अति द्रुत लय में भी कायम रहता था।आपके स्वरों की नयी-नयी रचनाओं की उपज लयकारी ताल में मिलाने की रीति मौलिक थी।पं० निखिल बनर्जी जी के बाज में कभी- कभी सरोद अंग की छाया दिखाई देती थी, आपके सितार वादन में विशेष रूप से गायकी अंग अधिक प्रबल रहती थी।सितार अंग गायकी अंग का काम हो या आलाप जोड़, झाला, गत या तोड़े तंत्रकारी का काम हो हर शैली में श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर ही लेते थे। "पं० निखिल जी के अनुसार तान में सुर है तान में ही राग की रंजकता है। एक विन्यास में एक तान का दोहराव उचित नहीं होता है इस संदर्भ में स्वर सौन्दर्य का प्रदर्शन और टोन का वैशिष्ट्य उनका स्वयं का था"[4]

सुंदर मींड़, सपाट तानें, लंबी घुमावदार तिहाइयाँ, रागदारी, लयकारी, तानों की वादन में स्वरों की शुद्धता उनकी विशेषता थी। झाले में तीव्र लय के साथ ही बाएं हाथ का भरपूर प्रयोग आपके झाले में मींड़ युक्त स्वरों का बहुत्व था । साथ-साथ लय की प्रधानता दृष्टिपात होती थी । आपने अपने सितार में 8 तारों का भी प्रयोग किया।पं० निखिल बनर्जी जी की एक मुख्य विशेषता सितार वादन में मेरुखण्ड विधि से आलाप व तान वादन करना था जिसका प्रारंभ सर्वप्रथम आपनेही सितार पर किया।मैहर घराने की संगीत परंपरा में सितार वादन के क्षेत्र में पं० उमाशंकर मिश्र, विदुषी कृष्णा चक्रवर्ती, पं० इंद्रनील भट्टाचार्य इत्यादि, ने मैहर घराने की वादन शैली की विशेषताओं को सितार पर प्रस्तुत करने का भरपूर प्रयास किया है।

निष्कर्ष

मैहर घराने के सितार वादकों की प्रस्तुतीकरण की इस नवीन शैली से सितार वाद्य को श्रोताओं में अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया ।इस घराने की अपनी एक सबसे प्रमुख विशेषता थी जो की उसकी वादन शैली में स्पष्ट दिखाई देती है, एवं इस घराने के कलाकारों के परिवेश अथवा वातावरण से भी प्रभावित रहती थी ।जैसे पं० रविशंकर जी की वादन शैली में तंत्रकारी अंग के वातावरण का प्रभाव अधिक रहता था।अतः सितार वादन में

[1]वर्मा, डॉ0 संजय कुमार, मैहर घराने की संगीत परंपरा पृ० सं० ७४
[2] भटनागर, श्रीमती रजनी, सितार वादन की शैलियाँ पृ० सं० २३२
[3]सितार वादन शैली में राग और बंदिशें, परम्परा और प्रयोग, पृ० सं० ७७-७८
[4] जैन, डॉ० वीणा, सेनिया घराना और सितार वादन शैली पृ० सं० १२८

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मैहर घराने के स्व० बाबा अलाउद्दीन खाँ के सभी शिष्य जैसे- पं० रविशंकर, पं० निखिल बनर्जी आदि के वादन में बाबा अलाउद्दीन खाँ साहब के स्वर लगाव, प्रस्तार, घनत्व, ध्वनि, विशिष्टता आदि की छाप स्पष्ट दिखाई देती है।इस प्रकार निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं, कि मैहर घराने में सितार वाद्य के स्वतंत्र वादन का प्रचार बढ़ा एवं इस वाद्य की वादन प्रणाली में भी अनेक बदलाव आए, सितार वाद्य की बनावट, ध्वनि की गूंज, तकनीक आदि का विकास हुआ।सितार में गायकी अंग, तंत्रकारी अंग, लरज-खरज के तारों का प्रयोग, एक अन्य जवारी का प्रयोग इत्यादि सितार वादन की क्रिया का विकास एवं इसका प्रचार इस घराने की प्रमुख विशेषता रही है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. नंदी, डॉ० पांचाली, सितार वादन शैली में राग और बंदिशें, परम्परा और प्रयोग, प्रथम संस्करण 2019, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली
2. जैन, डॉ० वीणा, सेनिया घराना और सितार वादन शैली, प्रकाशन 2008, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
3. वर्मा, डॉ० संजय कुमार, मैहर घराने की संगीत परम्परा, प्रथम संस्करण 2015, कला प्रकाशन, वाराणसी
4. भटनागर, श्रीमती रजनी, सितार वादन की शैलियाँ, प्रकाशन 2014, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली